

संप्राप्तये 3, 11266. पद्माये चतुरो वेदान्संप्राप्तयद्वृत्तपतिः (पद्मासांश्चतुरो वेदान्संप्राप्तये वृत्त die neuere Ausg.) HARIV. 11872.

— प्रति *entgegen sagen d. i. antworten oder sprechen zu*; mit dem acc. der Person N. 2, 19, 18, 13, 19, 1. MBH. 1, 5294. (शिवा; acc.) तास्तदा प्रत्यभाषत रासभाः 2, 2696. 3, 2370. 2419. 2422. 2423. 3, 7005. अन्योऽन्यं प्रत्यभाषत 6, 2184. R. 1, 8, 29. 2, 33, 23. 37, 27. 66, 2. R. GORR. 1, 74, 15. 2, 74, 17. KATHAS. 16, 20. 27, 85. 28, 154. BHAG. P. 1, 13, 2 (भाषितुम्). 8, 12, 11. PANKAT. 193, 13. BHATT. 3, 39. प्रत्यभाषम् MBH. 3, 7124. 7145. प्रतिभाष्यताम् R. 2, 37, 29. mit dem acc. der Sache: पक्षयाभिक्रितं वाक्यं मया च प्रतिभाषितम् HARIV. 9621. तत्प्रतिभाषितं वचः R. 4, 27, 21. *erzählen, mittheilen*: शंकरस्योमया सार्धं संवादं प्रत्यभाषत MBH. 13, 6338. *nennen*: तामुपगोतिं प्रतिभाषते CRUT. 6. — प्रत्यभाषत RAGAT-TAR. 6. 327 fehlerhaft für प्रत्यभासत. Vgl. प्रतिभाषा.

— संप्रति *antworten* R. 5, 68, 1.

— वि 1) *schmähen*: मामेव हि विशेषेण विभाष्य (= परुषमुक्त्वा Schol.) परिगृह्णे MBH. 3, 4234. (तम्) विभाष्याभ्यर्कनद्राजिन्दिष्येनास्त्रेण HARIV. 7300. विभाष्ययातिनः केचित्पा चतुर्केनो ऽपरे MBH. 13, 2156. — 2) विभाषित *einen Wechsel zulassend, so und auch anders sein könnend*: विभाषितगुण Nir. 10, 17. प्रत्यारम्भो विभाषितः KAUC. 141. P. 7, 3, 25. 8, 1, 74. SIDDH. K. zu P. 7, 2, 10. — Vgl. विभाषा.

— संवि *sprechen zu*: अन्योऽन्यं संविभाष्यैवम् MBH. 12, 12367.

— सम् 1) *sich unterhalten, sprechen mit*: एवं संभाषमाणौ MBH. 3, 7473. R. 3, 68, 10. इति संभाषतो वाचं श्रुत्वा MBH. 1, 5190. न प्रेक्षेण संभाषेरन् LĀṬI. 3, 3, 16. GOBH. 1, 4, 2. M. 8, 55. MBH. 3, 5411 (संभाषित्वा ed. Bomb.). R. 2, 83, 14. BHAG. P. 6, 18, 47. संभाषमाण एवाथ शिष्येण सहितः R. GORR. 1, 2, 22. तैश्च नहं संभाषते Verz. d. Oxf. H. 231, a, 2. Schol. zu KĀṬI. CR. 7, 3, 7. mit dem acc. der Person zu *Jmd sprechen, mit Jmd sprechen, anreden, begrüßen* MBH. 1, 5292. R. 2, 32, 86 (23 GORR.). 6, 71, 19. 97, 7. SUCC. 1, 109, 9. KATHAS. 10, 35. 29, 80. 43, 301. PANKAR. 1, 7, 1. 15. 63. 67. यावदहं स्वसखीं ग्रामादभ्यागतां संभाष्य हुत-तरमागच्छामि PANKAT. 36, 13 (32, 19 ed. orn.). 37, 21 (34, 5 ed. orn.). 240, 13. HIT. 14, 20. BHAG. P. 1, 6, 38. संभाष्यते नादरान् Spr. 3098. HIT. 63, 18. 64, 12. 133, 6. v. 1. Ohne Ergänzung KAUSH. UP. 2, 4. MBH. 3, 16731 (एवं संभाषमाणायः सावित्र्या भो mit der ed. Bomb. zu lesen). 13, 4807. Spr. 2163. 2517. BHAG. P. 3, 24, 26. संभाषित *Unterhaltung* PANKAT. 112, 23. — 2) *einstimmen* R. 1, 67, 15 (69, 16 GORR.). — 3) *Jmd (acc.) bereden*: अन्यथा राज्यसुखं परित्यज्य स्थानात्तरं गतुं कथं मां संभाषसे HIT. 37, 6. — 4) *hersagen*: पद्मासांश्च चतुरो वेदान्संप्राप्तये वृत्तपतिः (Lesart der neuere Ausg.) HARIV. 11872. = चतुर्भिर्वेदः संवादं कृतवान् वेदान् लब्धवान् Schol. आर्षुर्मे देहि (ohne इति!) संभाष्य विल्लवे प्रभविष्ये zu Vishnu gerichtet *hersagend* PANKAR. 3, 14, 25. — Vgl. संभाषण u. s. w. — caus. 1) *sich mit Jmd (instr.) unterhalten* MBH. 3, 5411 (संभाषित्वा च st. संभाषयित्वा ed. Bomb.). *Jmd (acc.) anreden*: वयं संभाषयाम्येनाम् R. 5, 36, 96. — 2) *Jmd bereden, Jmd gute Worte geben* v. 1. für संभाषयति Spr. 2459.

— उपसम् 3. उपसंभाषा.

— प्रसम् *Jmd anreden, begrüßen* R. GORR. 2, 4, 8.

2. भाष् (von भष्) adj. *bellend* in रत्नो wie ein Rakshas bellend:

ईश्वरो हास्य वाचो रत्नोभाषो जनिते: AIR. BA. 2, 7. Nach Śā. acc. pl. nach unserer Ansicht gen. sg. durch Attraction.

भाष् s. भास.

भाषक (von 1. भाष् adj. *sprechend* — *schwatzend über* am Ende eines comp.: किंचिदतीतादिनिमित्तं Z. d. d. m. G. 14, 369, 12.

भाषण (wie eben) n. 1) *das Reden, Sprechen, Schwatzen*: Rede: संलापो भाषणं मित्रः AK. 1, 1, 5, 17. HALĀ. 1, 150. MBH. 3, 5813. न शक्ता भाषणे R. 2, 103, 1. Spr. 310. v. 1. 4167. 3149. आचारः कुलमाध्याति देशमाध्याति भाषणम् Vṛddha-KĀ. 3, 2. 13. 19. Spr. अनुरागो im 4ten Tit. BHAG. P. 5, 2, 6. असत्यस्य M. 11, 69. असत्यं Nir. 3, 2. असत्यं SUCC. 1, 192, 9. MALLIN. zu KUMĀRAS. 4, 9. अनृतं M. 8, 101. सत्यं KATHAS. 27, 119. कलं BHAG. P. 7, 1, 17. अमृतभाषणैः Spr. 4243. प्राकृतभाषण Schol. zu ÇĀK. 9, 6. उच्चैर्भाषण *lautes Reden* SUCC. 1, 69, 17. निरत्ययभाषणा adj. f. Verz. d. Oxf. H. 216, b, 43. Vgl. प्रियं (auch Śā. D. 39, 8). — 2. *der Ausdruck der Befriedigung nach Erreichung des Zieles* (im Drama PRATĀPAR. 22, b, 3.

भाषणीनौलेम m. pl. N. pr. eines Geschlechts ŚAṢSK. K. 186, a, 9. Scheint eine falsche Form zu sein.

भाषा (von 1. भाष् f. 1) *Rede, Sprache* AK. 1, 1, 5, 1. H. 241. HALĀ. 1, 8. सत्या न भाषा भवति यद्यपि स्यात्प्रतिष्ठिता । बहिश्चेदाप्यते धर्मा-न्नियताद्यावद्वारिकात् ॥ M. 8, 164. BHAG. P. 5, 6, 6. इह भाषाभिहितैः MBH. 13, 502. चारुभाष adj. 1, 8060. भाषां चैवा (गोपानां) समाध्याय *ihre Sprache annehmend* 4, 280. *Verkehrssprache*, in der älteren Zeit im Gegens. zur *vedischen Sprache*, in der späteren Zeit — zum *Sanskrit* Nir. 1, 4, 5. P. 3, 2, 108. 6, 1, 181. VĀRTI. zu P. 8, 4, 45. Z. d. d. m. G. 7, 168. 399. नार्यां स्नेह्यति भाषाभिः MBH. 2, 2040. विद्यादाषाश्च विविधा नृणाम् M. 9, 332. Spr. 1243. सर्वभाषाविद् MBH. 1, 7582. भाषासु विविधासु ŚĀH. D. 642. देशभाषास्वभावश्च KĀM. NĪTIS. 18, 37. त्यक्तभाषा-त्रय KATHAS. 3, 129. षड्भाषास्वपि दृश्यते व्यसनिता KAURAP. 19 in Journ. asiat. IV<sup>e</sup> S. T. XI, 472. महाराष्ट्र Schol. zu NĀISH. 22, 47. neben उपभाषा DhŪRTAS. in LA. 67, 7. Bez. *einer Gruppe von Prākṛit-Sprachen*: महाराष्ट्री शैरसेनी प्राच्यावत्ती च मागधी । इति पञ्चविधा भाषा युक्ता न पुनरष्टधा ॥ Verz. d. Oxf. H. 181, a. No. 412. MUIR. ST. II, 37. भाषादि-द्वयगीतानि ÇĀK. in LA. (II) 33, 6. — 2) *Beschreibung, Definition*: स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य BHAG. 2, 54. — 3) bei den Juristen *Klage* ÇĀKDr. nach MIT. und VĀYANĀTAT. DhŪRTAS. in LA. 90, 1. — 4) Bez. einer Rāgini ÇĀKDr. und WILSON angeblich nach HĀ. — Vgl. तर्क, देश, पा, भूत.

भाषापरिच्छेद भा + प, m. Titel eines Compendiums des Vaiśeṣika-Systems, herausg. in der Bibl. ind.

भाषामञ्जरी भा + म, f. Titel einer grammatischen Schrift Verz. d. Oxf. H. 331, a. No. 827. GILD. Bibl. 396.

भाषार्णव भाषा + ण, m. Titel einer Schrift des Kāndarāṣekhara ŚĀH. D. 174, 2.

भाषावृत्ति भाषा + वृ, f. Titel eines Commentars zu Pāṇini's Grammatik COLEBR. Misc. Ess. II, 40. व्यत्ययवृत्ति Titel eines Commentars zu dem eben genannten Werke 41.

भाषासम भा + सम, m. eine best. rhetorische Figur: ein Satz, der